उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 439/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 13–07–2023

दिनांक	:	13 जुलाई, 2023
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की षष्टम् बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की षष्टम् बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 13 जुलाई, 2023 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ, आ. न.दे. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विभाग, पशुपालन विभाग; गन्ना विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 13 से 19 जुलाई, 2023 तक) उत्तर प्रदेश के ज्यादातर अंचलों में पिछले सप्ताह से मानसून पूर्ण रूप से सक्रिय रहा। आगामी सप्ताह के सभी दिनों में पश्चिमी, पूर्वी, बुंदेलखण्ड एवं मध्य उत्तर प्रदेश के सभी अंचलों में अनेक स्थानों पर हल्की/मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इसके साथ–साथ प्रारंभ के दो दिनों (दिनांक 13 एवं 15 जुलाई, 2023) में प्रदेश के उत्तरी तराई जनपदों में कहीं–कहीं भारी से बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है, जबकि अन्य दिनों में प्रदेश के सभी अंचलों के जनपदों में वर्षा के तीव्रता एवं क्षेत्रफलीय वितरण में आंशिक तौर पर कमी आने की संभावना है प्रदेश के सभी अंचलों में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान सामान्य से कम रहने की संभावना है। वहीं पूर्वी दक्षिणी हवायें औसत सामान्य गति 12 से 15 कि.मी. प्रति घंटा की दर से चलने की संभावना है। सप्ताह के सभी दिनों में प्रदेश के सभी अंचलों में सापेक्षिक आर्द्रता अधिकतम 85 से 95 प्रतिशत के बीच एवं न्यूनतम 60 से 75 प्रतिशत के बीच रहने की संभावना है।

1 जून से 12 जुलाई, 2023 तक जनपदवार मानसून की औसत वर्षा 203.7 मिमी के सापेक्ष 205.0 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य वर्षा का 100.6 प्रतिशत है। जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 71.9 मिमी. वर्षा प्राप्त हो चुकी थी जो सामान्य वर्षा का 34.9 प्रतिशत थी। प्रदेश के 75 जनपदों में से 24 जनपदों (कन्नौज, मुजफ्फरनगर, मेरठ, मैनपुरी, सहारनपुर, एटा, फिरोजाबाद, बाराबंकी, बदायूं, कासगंज, बागपत, महोबा, हमीरपुर, मुरादाबाद, जालौन, आगरा, फर्रूखाबाद, हापुड़, औरैया, इटावा, अम्बेडकरनगर, झांसी, बांदा, बिजनौर) में सामान्य से अधिक वर्षा (120 प्रतिशत से अधिक) जबकि 25 जनपदों में सामान्य, 15 जनपदों में न्यून वर्षा, 07 जनपदों में अतिन्यून वर्षा एवं 04 जनपदों में अत्यन्त न्यून वर्षा (सामान्य वर्षा की 40 प्रतिशत से कम वर्षा) प्राप्त हुई है। सबसे अधिक वर्षा 491.6 मिमी. जनपद कन्नौज में रिकार्ड की गई जो सामान्य वर्षा के सापेक्ष 312.6 प्रतिशत है तथा सबसे कम वर्षा जनपद कुशीनगर में रिकार्ड की गई जो सामान्य वर्षा 278.4 मिमी. के सापेक्ष मात्र 72 मिमी. प्राप्त हुई। जो सामान्य वर्षा का मात्र 25.9 प्रतिशत है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त खरीफ फसलों के आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 07 जुलाई, 2023 तक कुल लक्ष्य 96.20 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 28.12 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है। जो लक्ष्य का 29.2 प्रतिशत है। सुगंधित धान के लक्ष्य 8.62 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.30 लाख हेक्टेयर की पूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 38.3 प्रतिशत है। संकर धान के लक्ष्य 15.88 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.92 लाख हेक्टेयर में पूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 24.68 प्रतिशत है। मक्का की बुआई के लक्ष्य 8 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.49 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जो लक्ष्य का 43.6 प्रतिशत है। ज्वार के लक्ष्य 2.18 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.57 लाख हेक्टेयर की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 26.1 प्रतिशत है। बाजरा के लक्ष्य 10.1 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 2.05 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 20.3 प्रतिशत है। उर्द के लक्ष्य 7.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 1.80 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 24.8 प्रतिशत है। मूंग के लक्ष्य 0.40 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.11

लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 28.4 प्रतिशत है। अरहर के लक्ष्य 3.60 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.78 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 21.8 प्रतिशत है। मूंगफली के लक्ष्य 1.24 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.59 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 47.9 प्रतिशत है। तिल के लक्ष्य 4.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.86 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है, जो लक्ष्य का 20.4 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- **जिन क्षेत्रों में सामान्य से कम वर्षा हुई है उन क्षेत्रों में कृषक दलहनी, तिलहनी व श्रीअन्न फसलों की बुवाई प्राथमिकता के आधार पर करें।**
- **दलहनी फसलों का बीज यदि उपचारित नहीं है तो संस्तुति अनुसार उपचारित कर फसल के विशिष्ट राइजोबियम कल्वर से अवश्य उपचारित करें।**
- **धान की रोपाई हेतु मौसम अनुकूल है अतः कृषक रोपाई का कार्य यथाशीघ्र पूर्ण करें।**
- **धान की ''डबल रोपाई या सण्डा प्लाटिंग'' हेतु दूसरी रोपाई पुनः पहले रोपे गये धान के 03 सप्ताह बाद 10 x 10 से.मी. की दूरी पर करें।**
- **धान की रोपाई वाले खेत में 1 फीट ऊँची मेढ़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।**
- **धान की रोपाई हेतु खेत की तैयारी के समय 25 कि.ग्रा./हे. दर से जिंक सल्फेट डालें।**
- **धान की तैयार पौध की रोपाई जहां तक संभव हो 4 ग्रा. ट्राईकोडर्मा प्रति लीटर पानी की दर से अथवा 1 ग्रा. कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर उपचारित करें।**
- **कीटनाशकों व कृषि रक्षा रसायनों का प्रयोग कृषि वैज्ञानिकों या कृषि विभाग के अधिकारियों के परामर्श से ही करें।**
- **प्रदेश के सभी अंचलों में वर्षा के दौरान आकाशीय बिजली/वज्रपात गिरने की संभावना के दृष्टिगत लोगों को जागरूक रहने तथा वर्षा के दौरान पेड़ों/टीन शेड/विद्युत पोलों आदि से दूर रहने की सलाह दी जाती है तथा अपने मोबाइल में सचेत ऐप स्थापित/इंस्टाल करने पर सचेतक ध्वनि/अलार्म बजने पर अपने को सुरक्षित करें।**

धान की खेती

- रोपाई के बाद जो पौधे मर गये हो उनके स्थान पर दूसरे पौधे तुरंत लगा दे, ताकि प्रति इकाई पौधों की संख्या कम न होने पायें।
- पलेवा करके ड्रम सीडर से धान की शीघ्र पकने वाली किस्मों की 50 से 55 कि.ग्रा. प्रति हे. बीज की दर से बुवाई करें।
- धान की सुगंधित किस्मों की रोपाई 15 से 31 जुलाई के बीच करें।
- ऊसर एवं बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में रोपाई 30 दिन की पौध होने पर करें।
- धान की 20–25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 50–55 हिल तथा 2–3 पौधा प्रति हिल 3–4 सेमी. की गहराई तक करें।
- धान की सीधी/ड्रम सीडर से बुवाई की स्थिति में प्रेटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.25 लीटर बुवाई के 2–3 दिन के अंदर अथवा विसपाइरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत ए.सी. 0.20 लीटर बुवाई के 15–20 दिन बाद प्रति हे. की दर से नमी की स्थिति में लगभग 500–700 लीटर पानी में घोलकर फ्लैट फैन नाजिल से छिड़काव करें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3–4 लीटर अथवा प्रोटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 2–3 दिन के अन्दर छिड़काव करें।
- जून के प्रथम सप्ताह में बोये गये धान की सीधी बुवाई में खरपतवार की निराई करें।
- रोपाई किये गये धान में 15 से 21 दिन पर प्रथम बार यूरिया की टापड्रेसिंग करें।

मक्का की खेती

- मक्का की मध्यम अवधि की किस्मों की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- पूर्व से बोये गये मक्का में जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

- पूर्व में बोए गए मक्के की निराई तथा विरलीकरण के बाद नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा का एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्का में खरपतवार नियंत्रण के लिए एट्राजीन 2 किग्रा./हे. की दर से बुआई के 2 दिन के अन्दर 800 ली./हे. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

श्रीअन्न की खेती

- **बाजरा** की संकुल किस्मों घनशक्ति, डब्लू.सी.सी.–75, आई.सी.एम.बी.–155, आई.सी.टी.पी.–8203, राज–171 तथा न.दे.पफ.बी.–3 तथा संकर किस्मों 86 एम 84, पूसा–322, आई.सी.एम.एच.–451 तथा पूसा–23 की बुवाई करें।
- **ज्वार** की संकुल किस्मों यथा एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), सी.एस.बी.–15, वर्षा, विजेता व सी.एस.बी.–13 तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–23, 13, 18, 14, 9, 16 की बुवाई यदि अभी तक नहीं की है तो यथा शीघ्र समाप्त करें।
- **सावां** की किस्मों यथा आई.पी.एम.–151, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–100, आई.पी.एम.–148 आई.पी.एम.–97 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- **कोदों** की किस्मों यथा जी.पी.वी.के.–3, ए.पी.के.–1, जे.के.–2, जे.के.–62, वम्बन–1 व जे.के.–6 की बुवाई करें।

मूंग की खेती

- मूंग की किस्मों यथा आजाद मूंग–1, पूसा–1431, मेहा 99–125, एम.एच.–2.15, टी.एम.–9937, मालवीय, जनकल्याणी, मालवीय, जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, मालवीय ज्योति, पंत मूंग 4, नरेन्द्र मूंग–1, पी.डी.एम.–11, आशा की बुवाई करें।

उर्द की खेती

- उर्द की किस्मों यथा शेखर–1, शेखर–2, शेखर–3, आई.पी.यू.–94–1, नरेन्द्र उर्द–1, पंत उर्द–9, पंत उर्द–8, आजाद–3, डब्लू.बी.यू.–108, पंत उर्द–31, आई.पी.यू.–2–43 की बुवाई करें।

अरहर की खेती

- अरहर की अधिक उपज हेतु देर से पकने वाली उन्नत किस्मों यथा मालवीय चमत्कार, नरेन्द्र अरहर–2, बहार, अमर, नरेन्द्र अरहर–1, आजाद, पूसा–9, मालवीय विकास (एम.ए.6), टा–64, टा–28, चन्द्रा, उत्कर्ष, एम–13, अम्बर, चित्रा, कौशल, टी.जी.–37ए व प्रकाश की बुवाई करें।
- यदि बीज उपचारित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्राम थीरम तथा एक ग्राम कार्बेन्डाजिम के मिश्रण अथवा 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा+1 ग्राम कार्बाक्सिन कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। बोने से पहले बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

तिल की खेती

- तिल की उन्नतशील किस्मों यथा गुजरात तिल–6, आर.टी.–346, आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर टाइप–78, टाइप–13, टाइप–4 व टाइप–12 की बुवाई करें।
- फाइलोडी रोग से बचाव हेतु बुवाई के समय कूँड़ में फोरेट 10 जी. 15 किग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

मूँगफली की खेती

- मूँगफली की उन्नतशील किस्मों चन्द्रा उत्कर्ष, एम–13, अम्बर, चित्रा (एम.ए.10), कौशल, टी.जी. 37ए, प्रकाश की बुआई पूर्ण कर लें। देर से बुआई करने पर फसल में बडनिक्रोसिस बीमारी लगने की संभावना ज्यादा होती है।

गन्ना की खेती

- यदि गन्ने की लंबाई पांच फुट हो गई हो तो ढ़ाई फुट की ऊँचाई पर प्रथम बँधाई करें। प्रथम बँधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बँधाई करें।
- बसन्तकालीन गन्ने में पर्याप्त ब्यॉत की दशा में मिट्‌टी चढ़ा दें, जिससे अवांछित कल्लों की वृद्धि न हो।
- गन्ने में एन.पी.के. (19:19:19) का छिड़काव/2.0 किलोग्राम प्रति एकड़ या 5.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
- बेधक कीटों के नियंत्रण हेतु 2.5 कार्ड /हेक्टेयर ट्राइकोग्रामा का उपयोग करें।

- पोक्का बोइंग को नियंत्रित करने के लिये कापर आक्सीक्लोराइड 0.2 प्रतिशत अर्थात 100 लीटर पानी में 200 ग्राम की दर से अथवा वावस्टीन 0.1 प्रतिशत की दर से अर्थात 100 लीटर पानी में 100 ग्राम की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- सब्जियों में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- बैंगन, मिर्च एवं अगेती फूलगोभी की संस्तुत किस्मों की नर्सरी में बुआई करें। नर्सरी को कीटों से बचाने हेतु लो–टनेल पॉलीहाऊस का प्रयोग करें तथा ऊंची बेड पर ही नर्सरी डालें। पॉलीहाऊस में जैविक खाद का ही प्रयोग करें।
- वर्षाकालीन कद्दूवर्गीय सब्जियों यथा लौकी, तोरई, काशीफल व टिण्डा की बुआई करें तथा इन्हें मचान पर चढ़ायें।
- कन्नौज तथा बस्ती जनपद में सब्जियों का सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित है। अतः सब्जियों के उच्च कोटि के हाईब्रिड पौधे प्राप्त करने हेतु कन्नौज में 9450449436 तथा बस्ती में 9415438640 मोबाइल नम्बरों पर सम्पर्क स्थापित करें।

बागवानी

- आम, अमरूद, लीची, आंवला, कटहल, केला, नींबू आदि फलदार पौधों का रोपण करें।
- आम की प्रजातियों यथा दशहरी, लगड़ा, चौसा, लखनऊ सफेदा, आम्रपाली, मल्लिका, अम्बिका, रामकेला आदि की संस्तुति अनुसार रोपाई करें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफि्टंग एवं लीची व नींबू में गूँटी बॉधने का कार्य करें।
- केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध का रोपण करें।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।
- फलों की गुणवत्तायुक्त पौध हेतु सहारनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, बस्ती तथा झांसी में स्थापित केन्द्रों तथा केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ से सम्पर्क करें।

पशुपालन

- वर्तमान में खुरपका एवं मुहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण सभी पशुचिकित्सालयों में कराया जा रहा है। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निशुल्क उपलब्ध है। बड़े पशुओं में गलाघोटू की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी क्यू वैक्सीन से टीकाकरण करायें।
- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- पशुओं को खुले में न बांधे क्योंकि आकाशीय बिजली के खतरे से पशुओं को शारीरिक नुकसान हो सकता है।
- पशुओं को ऊँचे स्थान पर बांधें।
- सभी पशुपालक/कृषक खरीफ चारा फसलों की उन्नतशील किस्म के बीज की बुवाई करें।
- वर्तमान में बारिश का मौसम होने की दशा में जलभराव की स्थिति के कारण मच्छर/मक्खी का प्रकोप बढ़ जाता है, जिससे बचाव हेतु आवश्यक दवाओं/क्रमिनाशक का नियमित छिड़काव आवश्यक रूप से कराया जाय।
- बकरी पालन, भेड़ पालन, सूकर पालन एवं कुक्कुट पालन की तकनीकी जानकारी तथा इन सभी विषयों पर चल रही विभागीय योजनाओं के बारे मे सभी कृषक/पशुपालक अपने निकटतम मुख्य पशुचिकित्साधिकारी/पशुचिकित्साधिकारी से प्राप्त कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.–1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- कार्प मछलियों की 50 मिमी. अथवा अधिक आकार की 10000 स्वस्थ्य अंगुलिकायें प्रति हे. की दर से संचय की जा सकती हैं।

- छः प्रजातियों के मिश्रित पालन में कतला 10 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, मृगल 15 प्रतिशत, सिल्वर कार्प 20 प्रतिशत, ग्रास कार्प 10 प्रतिशत, कामन कार्प 15 प्रतिशत का संचय अनुपात उचित होता है।
- तालाब में यदि 4 प्रजातियों का पालन किया जाता है तो कतला 30 प्रतिशत, रोहू 25 प्रतिशत, नैन 20 प्रतिशत व कॉमन कार्प 25 प्रतिशत का संचय अनुपात उचित होता है।
- तीन प्रजातियों के पालन में कतला 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत व नैन 30 प्रतिशत का संचय अनुपात होना चाहिये।
- तालाबों में बुझा चूना 250 किग्रा./हे. एवं गोबर की खाद 1 टन/हे. डलवा दें।
- निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। अतः सभी मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज संचय करने के लिए तैयारी पूरी कर ले और मत्स्य बीज का मॉग पत्र जनपद स्तर पर मत्स्य विभाग को कार्यालय में जमा कर दें।
- जिन तालाबों में मछली उपलब्ध है उनमें पहली वर्षा का पानी आने से मछलियों की मृत्यु की संभावना रहती है अतः ऐसे मत्स्य पालक जिनके तालाबों में आबादी का गन्दा पानी आता है वह 250 किग्रा./हे. की दर से बुझा चूना का छिड़काव कर दें और तालाब में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के लिए आक्सीफ्लों आदि मार्केट में उपलब्ध हैं को पहले से क्रय कर अपने पास रख लें ताकि समय से इसका उपयोग किया जा सके।

रेशम पालन

- कृषकों द्वारा रोपित शहतूत एवं अर्जुन वृक्षारोपण में घास, खरपतवार की सफाई कर गुड़ाई का कार्य कर लें तथा एरी रेशम कीटपालन हेतु अरण्डी बीज की बुवाई करें।
- टसर रेशम कीटपालन 15 जुलाई से प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु साफ–सफाई का अधिक ध्यान दिया जाय तथा कीट के प्रथम मोल्ट के बाद जीवनसुधा की औषधी का प्रयोग करना चाहिये।
- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।

वानिकी

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियॉ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।
- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।
- पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक खुले क्षेत्र में रखें तथा 15 दिन पौधों को जमीन पर रखने के उपरांत ही रोपण करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 20 जुलाई, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

13/07/23

(संजीव कुमार)
उप महानिदेशक

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।

10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन, योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
16. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
17. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
18. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
19. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
20. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
21. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
22. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
23. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
24. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
25. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
26. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
27. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
28. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
29. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
30. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
31. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
32. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
33. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
34. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
35. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
36. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
37. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
38. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
39. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
40. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
41. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

13-07-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की षष्टम् बैठक दिनांक 13 जुलाई, 2023 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. श्री वी.के. शुक्ला, अपर गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
6. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
7. डा. सीताराम मिश्रा, विभागाध्यक्ष, कृषि मौसम विज्ञान विभाग, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
8. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
9. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र , अमौसी लखनऊ।
11. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश।
12. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन, उत्तर प्रदेश।
13. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
14. श्री ओमकार सिंह त्यागी, प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई. गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, विजय खण्ड गोमती नगर लखनऊ।